किसी के प्यार के बदले फक़त हम प्यार देते हैं

श्लेष चन्द्राकर

बहुत ही खेल गंदा चल रहा है अब सियासत में
फँसी हैं आम इंसानों की यारो! जान आफ़त में

सफलता क्यों नहीं तुमने लिखी है मेरी किस्मत में
कमी क्या रह गई थी बोल दे मेरी रियाजत में

उसे भगवान जैसा मानते हैं हम हक़ीक़त में
हमारा साथ देने आता है जो भी मुसीबत में

कहाँ आँखों में खुद्दारी की है कोई झलक इनके
गुज़ारे जा रहे हैं ज़िन्दगी को लोग ज़िल्लत में

समझ आता नहीं किसको सुनाए हाले दिल अपना
कोई इंसान दिखता ही नहीं है आज फ़ुर्सत में

मिलाते हाथ तो लगता है वो अहसान करते हैं
नज़र आती नहीं है गर्मजोशी अब रफ़ाकत में

किसी के प्यार के बदले फक़त हम प्यार देते हैं
बताएँ फ़र्क़ क्या है फिर मुहब्बत में तिजारत में

जो न उतरे कभी वो नशा इसमें है

अपने सब फैसले लीजिए सोचकर
दोस्ती-दुश्मनी कीजिए सोचकर

लोग सुनते नहीं अब किसी बात को
दोस्तो! मश्वरा दीजिए सोचकर

लूटते लोग इमदाद के नाम पे
अब किसी से मदद लीजिए सोचकर

कोई उँगली उठाये नहीं आप पे
काम अपने सभी कीजिए सोचकर

जो न उतरे कभी वो नशा इसमें है
इश्क़ के जाम को पीजिए सोचकर

महासमुन्द (छत्तीसगढ़)

ISSN:2583-8849